तत्वमीमांसा

— एवं —

ज्ञानमीमांसा

अशोक कुमार वर्मा

Scanned with CamScanner

1. समस्या

मनुष्य विश्व में एक कण की भाँति है। जिस पृथ्वी पर वह वास करता है, वहीं विश्व का एक सप्तांश भी नहीं होगा तो उसका क्या ठिकाना है! देश और काल में स्थित सम्पूर्ण पदार्थों की समष्टि को विश्व कहा जाता है। इसमें चार प्रकार के पदार्थों का अनुभव होता है—जड़, जीव, चेतन तथा आत्म-चेतन पदार्थों का। ये पदार्थ सदा एकरूप नहीं रहते। इनमें परिवर्तन होता रहता है। विश्व की कोई वस्तु अटल और अचल प्रतीत नहीं होती। धर्म, समाज, जीव तथा वातावरण सभी बदलते नजर आते हैं। इस प्रकार हम विश्व को परिवर्तनशील पाते हैं। क्या यही विश्व का वास्तविक स्वरूप है? इसकी उत्पत्ति कैसे होती है? इन समस्याओं को दो भागों में बाँट दिया जा सकता है:—

(i) विश्व की उत्पत्ति कैसे हुई?

(ii) विश्व का स्वरूप जो आज है वैसा ही आरम्भ से है या परिवर्तनों के फलस्वरूप उसका स्वरूप ऐसा हुआ है?

इन प्रश्नों के उत्तर दिये गये हैं:—

(क) सृष्टिवाद (Theory of Creation)

(ख) विकासवाद (Theory of Evolution)

सृष्टिवाद के अनुसार विश्व की सृष्टि ईश्वर ने की है। विश्व की रचना जिस रूप में हुई थी, इसका वही रूप आज भी है। परिवर्तन वास्तविक नहीं है। विकास के अनुसार विश्व का वर्तमान रूप क्रमिक परिवर्तनों का परिणाम है। इसके अनुसार परिवर्तन वास्तविक है।

(iii) फिर विश्व के अनेकानेक पदार्थों का अनुभव मनुष्य को द्रव्यों (Substances) के रूप में होता है। इन द्रव्यों में कुछ उसके गुण (Attributes) होते हैं। मान लें मेरी कोठरी में एक लाल टेबुल हो तो सामने देखने पर टेबुल का अनुभव होता है। टेबुल का द्रव्य लकड़ी है और ठोसपन, लाली, चिकनापन आदि उसके गुण हैं। द्रव्य क्या है? गुणों से उसका क्या सम्बन्ध है? समस्या यह है कि द्रव्य-गुण से हम क्या समझते हैं? दर्शनशास्त्र में द्रव्य और गुण की अवधारणा क्या है?

(iv) द्रव्य-गुण से ही सम्बन्धित समस्या है कारण की। कारण क्या है? उसके लक्षण क्या है? कारण और कार्य में क्या सम्बन्ध है?

(v) विश्व देश और काल में विस्तृत प्रतीत होता है। देश और काल क्या है? ये समस्याएँ देश-काल-सम्बन्धी समस्याएँ हैं।

Scanned with CamScanner

(vi) विश्व को सृष्टि का परिणाम विचारा जाय या विकास का परिणाम। इससे एक दूसरी समस्या उत्पन्न हो जाती है। क्या सृष्टि का कोई प्रयोजन है? क्या विकास-क्रम में जो परिवर्तन होते हैं वे आकस्मिक हैं या उनके तह में कोई प्रयोजन है? इन प्रश्नों के दो उत्तर हो सकते हैं, एक है, यंत्रवाद (Mechanistic theory) और दूसरा प्रयोजनवाद (Teleological theory)।

2. सृष्टिवाद तथा विकासवाद

विश्व की उत्पत्ति

विषय-प्रवेश : जिस रूप में विश्व अभी है उसकी उत्पत्ति कैसे हुई? इस प्रश्न के दो उत्तर दिए जाते हैं:—

(i) कुछ विचारकों ने माना है कि जिस रूप में विश्व अभी है उसी रूप में ईश्वर ने एक बार सृष्टि कर दी। सारी योनियों के जीव, पशु, पौधे आदि की उसी ने सृष्टि की। नया कुछ नहीं। नया मात्र संख्या में वृद्धि है। यह मत सृष्टिवाद कहलाता है।

(ii) दूसरा उत्तर यह है कि विश्व का वर्तमान रूप एक बार की सृष्टि का फल नहीं है। काल क्रम में परिवर्त्तन के फलस्वरूप आज का रूप सामने आया है। यह परिवर्तन चलता रहेगा और हजार-लाख वर्षों के बाद विश्व का रूप आज से भिन्न होगा। यह मत विकासवाद कहलाता है।

3. सृष्टिवाद

(i) सृष्टिवाद के अनुसार विश्व अनादि नहीं है। इसकी सृष्टि हुई है। अतः विश्व सृष्टि का परिणाम है। विश्व की सृष्टि ईश्वर ने की है। ईश्वर को सृष्टि करने की इच्छा होती है और वह फौरन सृष्टि कर देता है। उसी वक्त सम्पूर्ण विश्व अर्थात् विश्व के सभी पदार्थों की सृष्टि हो जाती है। इस क्रम में देर नहीं होती। अतः विश्व का जो रूप सृष्टि के वक्त था, वही रूप आज भी है। उसमें किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं हुआ है।

(ii) विश्व की सृष्टि ईश्वर करता है। ईश्वर की अवधारणा अलग-अलग धर्मों में भिन्न है पर सभी इस बात से सहमत हैं कि ईश्वर सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, सर्वान्तर्यामी, अनादि तथा अनश्वर है। सृष्टि के पहले विश्व का अस्तित्व नहीं रहता, तब प्रश्न है कि वह सृष्टि क्यों करता है?

(iii) विश्व के पदार्थों में जो भेद है, वह अमिट है। यह भेद आरम्भ से ही है और सदा रहेगा। यह विचार कि एक जाति से दूसरी जातियों का आविर्भाव हुआ है, भ्रामक है। विश्व की जातियों का भेद प्रारम्भिक तथा मौलिक है।

सृष्टिवाद के भिन्न रूप

ईश्वर ने विश्व की सृष्टि की है, पर इस सृष्टि के लिए उपादान कहाँ से मिलता है? इसके सम्बन्ध में सृष्टिवाद के तीन रूप हो जाते हैं:—

(क) ईश्वर ने विश्व की सृष्टि की है। वही इसकी एकमात्र सत्ता है। उसके अतिरिक्त कोई अन्य पदार्थ मौलिक नहीं है। विश्व की सृष्टि के पहले केवल वही अस्तित्ववान है। यदि उसके अतिरिक्त किसी अन्य पदार्थ को भी परमार्थ माना जाय तो वह उससे सीमित हो जायेगा। सीमित होने से विश्व की सृष्टि की शक्ति उसमें नहीं रह सकती; अतः वह अकेला ही परमार्थ और अन्त्यतम सत्ता है। वह शून्य से ही विश्व की सृष्टि करता है। यह मत आगस्टीन आदि विचारकों का है।

Scanned with CamScanner

(ख) ईश्वर ने विश्व की सृष्टि की है, पर वह शून्य से विश्व की सृष्टि नहीं कर सकता। अभाव से भाव की कल्पना दोषपूर्ण है। अतः ईश्वर के अतिरिक्त जड़ द्रव्य भी परमार्थ है। उसी द्रव्य से ईश्वर विश्व को गढ़ देता है। जिस प्रकार कोई कलाकार मिट्टी के लोंदे से कोई मूर्त्ति बना देता है, उसी प्रकार ईश्वर उस द्रव्य से विश्व की रचना कर देता है। अतः ईश्वर विश्व का केवल निमित कारण है। उपादान कारण जड़ द्रव्य है। ईसाई धर्म और वैशेषिक दर्शन में यह विचार मिलता है।

(ग) उपर्युक्त दोनों विचारों के विरोध का समन्वय रामानुजाचार्य के दर्शन में मिलता है। उनके अनुसार विश्व का एकमात्र कारण ईश्वर है। पर ईश्वर शून्य से विश्व की सृष्टि नहीं करता। ईश्वर में ही चित् और अचित् पदार्थ है। चित् और अचित् ईश्वर के अवयव है और ईश्वर अपने अवयवों से ही सृष्टि करता है।

सारांश

(i) विश्व सृष्टि का परिणाम है।

(ii) सृष्टि ईश्वर ने की है।

(iii) ईश्वर सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, अन्तर्यामी तथा अनश्वर है।

(iv) किसी कमी के कारण नहीं अपितु अपनी इच्छा से उसने सम्पूर्ण विश्व की सृष्टि की है। सृष्टि में समय नहीं लगा।

(v) अतः विश्व के पदार्थों में जो भेद है वह प्रारम्भ से है और अमिट है।

(vi) विश्व की सृष्टि में जो उपादान लगा उसके स्रोत के सम्बन्ध में तीन मत हैं।

समीक्षा

सृष्टिवाद का मूल्यांकन करने के लिए हम इस सिद्धान्त को तीन खंडों में बाँट लेते हैं : (i) विश्व सृष्टि का परिणाम है और ईश्वर इसकी सृष्टि करता है, (ii) ईश्वर किस उपादान से विश्व का निर्माण करता है और (iii) विश्व का रूप जो आज है वही आरम्भ में भी था।

(i) इस सिद्धान्त के अनुसार ईश्वर विश्व की सृष्टि करता है। इसके पहले कि यह सिद्ध किया जाय कि ईश्वर ने सृष्टि की है, हमें यह सिद्ध करने की आवश्यकता है कि ईश्वर का अस्तित्व है। ईश्वर के अस्तित्व को प्रमाणित करने के लिए कई युक्तियाँ पेश की जाती है, पर सबमें त्रुटियाँ मिलती है। अतः जब ईश्वर का अस्तित्व ही संदिग्ध है तो उसे विश्व का स्रष्टा कैसे मान लिया जाय?

उसका अस्तित्व यदि सत्य हो भी तो उसे विश्व का स्रष्टा क्यों माना जाय? क्या सभी पदार्थों का स्रष्टा होता ही है? इसका उत्तर होगा, हाँ। पर हमने सभी पदार्थों का स्रष्टा देखा नहीं, जैसे, चाँद, तारे आदि का। यदि सभी पदार्थों का स्रष्टा होता है और विश्व का स्रष्टा ईश्वर है तो ईश्वर की सृष्टि किसने की? इसका उत्तर दिया जाता है कि ईश्वर अनादि है और इसका कोई कारण या स्रष्टा नहीं है। यदि ईश्वर का कोई स्रष्टा नहीं तो हम विश्व के बारे में क्यों नहीं ऐसा सोचें?

यदि ईश्वर है और वह विश्व की सृष्टि करता है तो वह ऐसा क्यों करता है? सृष्टिवाद में इस प्रश्न का सन्तोषजनक उत्तर नहीं मिलता। इसे लीला या माया या उसकी इच्छा कहने

Scanned with CamScanner

से उनका तर्क युक्तिसंगत नहीं होता। ईश्वर पूर्ण है, अतः उसमें इच्छा का अभाव है। इच्छा तो अभाव के कारण होती है और अभाव अपूर्णता का लक्षण है। लीला या माया का तात्पर्य है कि हम नहीं समझ सकते कि सृष्टि क्यों होती है। पर यह उत्तर हमें सन्तुष्ट नहीं करता।

ईश्वर सर्वशक्तिमान्, सर्वज्ञ तथा सर्वान्तर्यामी माना जाता है। वह पूर्ण है। पर यदि वह पूर्ण है तो उसने ऐसे विश्व की सृष्टि क्यों की, जिसमें दुःख, दर्द, अभाव तथा अपूर्णता हो? ऐसे दुःखमय विश्व को ईश्वर की सृष्टि कैसे माना जाय? पूर्ण से अपूर्ण की उत्पत्ति नहीं हो सकती।

ईश्वर ने किसी विशेष समय में विश्व की रचना की। पर अब प्रश्न है कि उस समय को ईश्वर ने क्यों चुना? क्यों नहीं उसने उसके पहले या बाद में विश्व की रचना की?

(ii) यदि यह मान भी लिया जाय कि ईश्वर ने विश्व की सृष्टि की तो उसने किस उपादान से काम लिया? यदि ईश्वर के अतिरिक्त उपादान भी परमार्थ माना जाय तो ईश्वर उससे सीमित हो जाता है। यदि ईश्वर ने शून्य से विश्व की रचना कर दी तो यह तर्क युक्तिसंगत नहीं है। शून्य से रचना कैसे हो सकती है? यदि ईश्वर ने अपने ही अंश से रचना की तो वह परिवर्तनशील है। यदि वह परिवर्तनशील है तो उसे नित्य नहीं माना जा सकता। पर ईश्वर को नित्य माना जाता है। अतः इस विचार में अन्तर्विरोध है।

(iii) यदि ईश्वर की सृष्टि का विचार मान भी लिया जाय तो प्रश्न है कि विश्व का जो रूप आज है, वही आरम्भ में भी था? सृष्टिवाद विश्व को समरूप मानता है। जो रूप विश्व का आज है, सृष्टि के वक्त भी वैसा ही था। विश्व अपरिवर्तनशील है। पर विश्व में परिवर्तन का अनुभव होता है।

कोई भी पदार्थ ऐसा नहीं, जिसमें किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं होता हो। विज्ञान के सिद्धान्त भी इसे सिद्ध करते हैं। विकासवाद इसी तथ्य को स्वीकार करता है। अतः सृष्टिवाद के इसी विचार से विकासवाद का विरोध है।

Scanned with CamScanner